5 दिसंबर, 2021 करेंट अफेयर्स

1. भारतीय नौसेना दिवस:

- भारतीय नौसेना दिवस प्रतिवर्ष 4 दिसंबर को मनाया जाता है।
- इस वर्ष भारतीय नौसेना दिवस निम्नलिखित विषय के अंतर्गत मनाया गया है:
- विषय "भारतीय नौसेना - युद्ध के लिए तैयार, विश्वसनीय और एकजुट है।"
- विषय केवल यह संदेश देने के लिए है कि भारत हिंद महासागर क्षेत्र में चीनियों की गतिविधियों पर सख्ती से नजर रख रहा है और भारतीय नौसेना किसी भी समय चीनी सेना का सामना करने के लिए तैयार है। यह संदेश पाकिस्तानी सेना के लिए भी है।
- ऑपरेशन ट्राइडेंट को यादगार बनाने के लिए प्रतिवर्ष भारतीय नौसेना दिवस मनाया जाता है। कराची हार्बर पर हमला करने के लिए 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान भारतीय नौसेना द्वारा यह ऑपरेशन शुरू किया गया था।

ऑपरेशन ट्राइडेंट क्या है?

ऑपरेशन ट्राइडेंट 4 दिसंबर की रात को लॉन्च किया गया था।

उस हमले के दौरान भारतीय नौसेना ने कराची में स्थित पाकिस्तानी नौसेना मुख्यालय में ईंधन भंडारण टैंकरों को बर्बाद कर दिया। भारतीय नौसेना ने पाकिस्तानी नौकाओं में से भी 4 को डुबो दिया और 500 पाकिस्तानी नौसेना कर्मियों को मार गिराया था। इसमें माइनस्वीपर्स और डिस्ट्रॉयर भी शामिल थे।

1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान पहली बार भारत ने जहाज-रोधी मिसाइल तैनात की। ऑपरेशन ट्राइडेंट के बाद ऑपरेशन पायथन किया गया।

ऑपरेशन पायथन क्या है?

ऑपरेशन ट्राइडेंट के दौरान पहले हमले के बाद, पाकिस्तानी सेना ने व्यापारी जहाजों के साथ मिलकर भारतीय नौसेना को मात देने का प्रयास किया। पाकिस्तानी नौसेना के इस कदम का मुकाबला करने के लिए ऑपरेशन पायथन शुरू किया गया था।

ऑपरेशन ट्राइडेंट क्यों शुरू किया गया था?

3 दिसंबर 1971 की शाम को पाकिस्तान ने भारतीय वायुसेना के ठिकानों पर हमला कर दिया। हमले के जवाब में भारतीय रक्षा बल ने ऑपरेशन ट्राइडेंट शुरू किया। तीन उच्च गति मिसाइल जहाजों अर्थात् निर्घाट, निपत, वीर को कराची बंदरगाह की ओर भेजा गया।

भारतीय नौसेना दिवस का इतिहास:

इससे पहले ब्रिटिश शासन के दौरान, भारतीय नौसेना दिवस अक्टूबर के महीने में रॉयल नेवी के ट्राफलगर दिवस के साथ मनाया जाता था। ट्राफलगर दिवस 21 अक्टूबर को मनाया जाता है।

भारतीय नौसेना:

भारत का राष्ट्रपति भारतीय नौसेना का सर्वोच्च कमांडर होता है। एक चार सितारा एडमिरल को भारतीय नौसेना के प्रमुख के रूप में नियुक्त किया जाता है और वह नौसेना की कमान संभालता है। भारतीय नौसेना की स्थापना 1612 में ब्रिटिश व्यापारी जहाजों की सुरक्षा के लिए की गई थी।

वर्तमान नौसेनाध्यक्ष (सीएनएस) एडमिरल आर. हरि कुमार हैं। 25 वें नौसेना प्रमुख ने करमबीर सिंह से पदभार संभाला, जो नौसेना से चार दशकों की सेवा के बाद 30 नवंबर 2021 को सेवानिवृत्त हुए।

2. 2022 से एयरपोर्ट्स को मिलेगी चेहरे से पहचान:

- अब हवाई यात्री 2022 से अपने बोर्डिंग पास के रूप में फेस स्कैन का उपयोग कर सकते हैं।
- यह सुविधा शुरू करने वाले पहले हवाई अड्डे विजयवाड़ा, कोलकाता, पुणे और वाराणसी हैं।

क्या हैं योजना के प्रमुख बिंदु?

- इस परियोजना को लागू करने के लिए भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण द्वारा NEC Corporation Private Limited को चुना गया है।
- चेहरा पहचान डेटा का विवरण डिजी यात्रा केंद्रीय पारिस्थितिकी तंत्र में संग्रहीत किया जाएगा।
- एक मोबाइल एप्लिकेशन के माध्यम से, यात्री को इस सेवा का लाभ उठाने के लिए प्रस्थान करने वाले हवाई अड्डे के बायोमेट्रिक बोर्डिंग सिस्टम को पीएनआर, पैक्स विवरण और चेहरे का बायोमेट्रिक्स भेजना होगा। यात्री इस सेवा का विकल्प नहीं चुनने का विकल्प भी चुन सकता है। इसका अर्थ है, यह वैकल्पिक है।
- चेहरे की पहचान राष्ट्रीय मानक और प्रौद्योगिकी संस्थान द्वारा डिज़ाइन किए गए सॉफ़्टवेयर का उपयोग करके की जाएगी।

यह डिजी यात्रा नीति का एक भाग है:

- इस परियोजना को डिजी यात्रा नीति के भाग के रूप में लागू किया जाना है। यह नीति नागरिक उड्डयन मंत्रालय द्वारा लागू की गयी है।
- इसके अंतर्गत मंत्रालय का उद्देश्य हवाई अड्डों पर यात्रियों की बायोमेट्रिक आधारित डिजिटल प्रोसेसिंग प्रदान करना है। इससे यात्रियों को सुरक्षा स्कैनर के माध्यम से तेजी से चलने में मदद मिलेगी।
- यह अतिरेक को दूर करेगा और संसाधन उपयोग को बढ़ाएगा।

3. राष्ट्रीय ब्लॉकचेन रणनीति का प्रस्ताव:

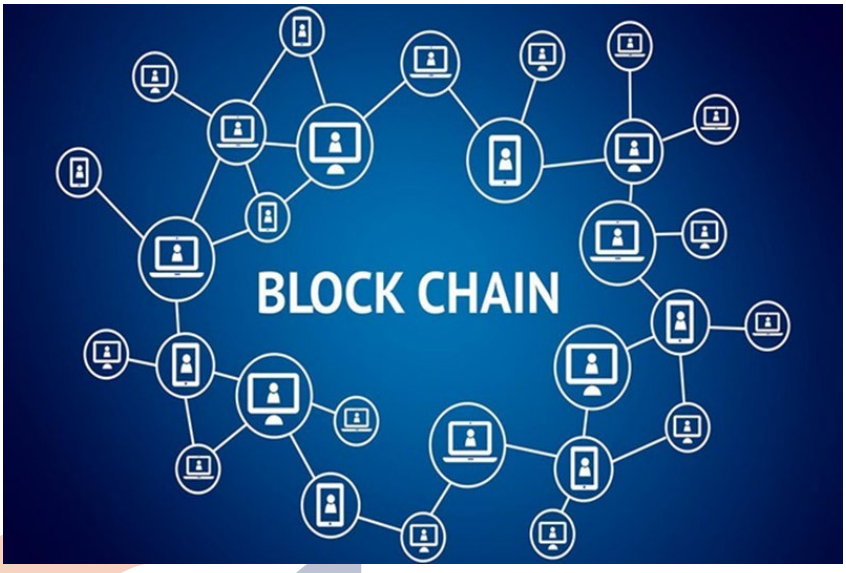

- हाल ही में, इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय ब्लॉकचेन रणनीति का प्रस्ताव किया गया था।
- इस रणनीति ने बहु-संस्थागत दृष्टिकोण अपनाया है। इसमें सेवा के रूप में ब्लॉकचेन की पेशकश के लिए एनआईसी (राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र), सी-डीएसी (उन्नत कंप्यूटिंग के विकास केंद्र) और एनआईसीएसआई (राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र सेवाएं इंक) सम्मिलित हैं।

राष्ट्रीय ब्लॉकचेन रणनीति क्या है?

- इस रणनीति का उद्देश्य ब्लॉकचैन प्रौद्योगिकी का उपयोग करके ई-शासन सेवाएं प्रदान करने के लिए विश्वसनीय डिजिटल प्लेटफॉर्म प्रदान करना है।
- इस रणनीति में मानव संसाधन विकास, सहयोग, नियामक ढांचा, प्रौद्योगिकी स्टैक, मानक विकास सम्मिलित है।
- यह केंद्र सरकार से राज्य-विशिष्ट ब्लॉक श्रृंखला अनुप्रयोगों को विकसित करने की मांग करती है।

मुख्य विशेषताएं:

- यह रणनीति चिकित्सा आपूर्ति और टीकों के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग की संभावना का पता लगाएगी।
- यह शासन में पारदर्शिता और दक्षता में सुधार करेगी।
- नीति आयोग ने ब्लॉकचेन तकनीक को एक आशाजनक तकनीक के रूप में मान्यता दी है। नीति आयोग के अनुसार, प्रौद्योगिकी में जवाबदेही और विकेंद्रीकरण जैसी अनूठी विशेषताएं हैं।

क्रिप्टो मुद्रा पर राष्ट्रीय ब्लॉकचेन रणनीति:

- राष्ट्रीय ब्लॉकचैन रणनीति ने क्रिप्टो मुद्रा को अपने ढांचे की सीमा से बाहर रखा है।
- हालांकि, भारत सरकार ने "द क्रिप्टोक्यूरेंसी एंड रेगुलेशन ऑफ ऑफिशियल डिजिटल करेंसी बिल, 2021" नामक एक बिल सूचीबद्ध किया था।
- यह विधेयक आधिकारिक डिजिटल मुद्रा के निर्माण के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है। साथ ही आरबीआई को डिजिटल करेंसी का सृजन करना है।

4. यूएई ने रिकॉर्ड 80 राफेल जेट खरीदने के सौदे पर हस्ताक्षर किए हैं:

- हाल ही में, संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) ने फ्रांस के साथ 80 राफेल युद्धक विमानों के लिए 14 अरब यूरो के समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं।
- यह किसी भी देश द्वारा राफेल जेट के लिए किया गया अब तक का सबसे बड़ा अंतरराष्ट्रीय ऑर्डर है।

सौदे के बारे में तथ्य:

- संयुक्त अरब अमीरात और फ्रांस ने हाल ही में 17 अरब यूरो के सौदे पर हस्ताक्षर किए हैं। इस सौदे के अंतर्गत, संयुक्त अरब अमीरात 80 राफेल जेट और 12 कैराकल सैन्य परिवहन हेलीकॉप्टर खरीदेगा।
- इस सौदे से फ्रांस में 7,000 नौकरियों का सृजन होगा। साथ ही, यह 2031 तक डसॉल्ट एविएशन-निर्मित विमान की आपूर्ति श्रृंखला की गारंटी देगा।
- **अवलोकन के लिए:** संयुक्त अरब अमीरात के प्रतिद्वंद्वी कतर ने हाल ही में फ्रांस से 36 राफेल जेट खरीदे थे।
- राफेल जेट संयुक्त अरब अमीरात के मिराज 2000 बेड़े का स्थान लेंगे। हालांकि, यूएस एफ-35 जेट्स अभी भी तैनात रहेंगे। यूएई के दो प्रमुख रक्षा आपूर्तिकर्ता फ्रांस और यूएसए हैं।

आलोचना के बिंदु:

- यूएई, फ्रांस के रक्षा उद्योग के सबसे बड़े ग्राहकों में से एक है। और 2011 से 2020 के बीच UAE ने फ्रांस से 4.7 बिलियन यूरो का सैन्य सामान खरीदा है। और परिणामस्वरूप, संयुक्त अरब अमीरात फ्रांस का पांचवां सबसे बड़ा हथियार ग्राहक है।
- यमन के खिलाफ इन हथियारों में से कुछ का इस्तेमाल किए जाने पर फ्रांस की आलोचना की गई थी। यमन में, एक सऊदी नेतृत्व वाला गठबंधन ईरान समर्थित विद्रोहियों के खिलाफ लड़ रहा है। और संयुक्त अरब अमीरात सऊदी नेतृत्व वाले गठबंधन का भाग है।

5. पीएम मोदी ने रखी दिल्ली-देहरादून आर्थिक गलियारे की आधारशिला:

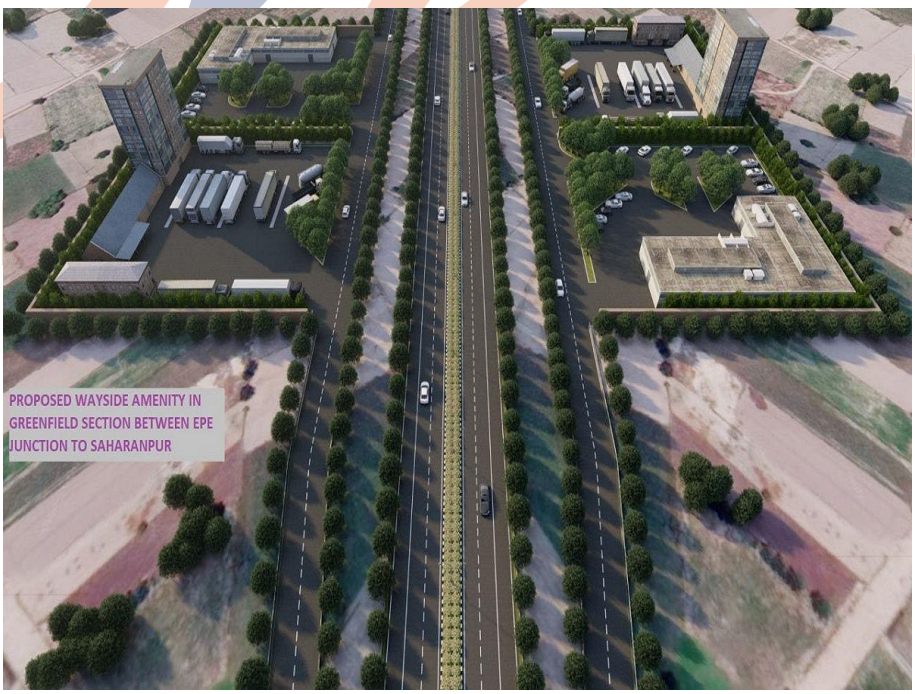

- हाल ही में, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने दून में चाइल्ड फ्रेंडली सिटी प्रोजेक्ट देहरादून, अत्याधुनिक इत्र और सुगंध प्रयोगशाला (सुगंधित पौधों के लिए केंद्र) के साथ दिल्ली-

देहरादून कॉरिडोर (ईस्टर्न पेरिफेरल एक्सप्रेसवे जंक्शन से देहरादून) का उद्घाटन किया है।

- यह कॉरिडोर दोनों शहरों के बीच की दूरी को 248-किमी से घटाकर 180-किमी कर देगा। दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेस-वे की कुल लंबाई करीब 175 किलोमीटर होगी।

अन्य महत्वपूर्ण परियोजनाएं क्या हैं?

- 120 मेगावाट की व्यासी जलविद्युत परियोजना।
- 38 - श्रीकोट और देवप्रयाग के बीच हर मौसम में चलने वाली चारधाम सड़क परियोजना।
- 33 - कौडिल्य और ब्रह्मपुरी के बीच किलोमीटर का विस्तार।

दिल्ली-देहरादून कॉरिडोर के मुख्य तथ्य:

- पीएम मोदी ने दिल्ली-देहरादून कॉरिडोर की आधारशिला रखी।
- इस राजमार्ग पर 8,300 करोड़ रु. का खर्च होगा।
- इस परियोजना को इंजीनियरिंग, खरीद और निर्माण मोड में निष्पादित किया जाना है।
- ईपीसी मोड में, सरकार सड़कों के निर्माण के लिए निजी डेवलपर को भुगतान करती है। और टोल राजस्व सरकार को प्राप्त होता है।
- राजमार्ग को 4 खंडों में विभाजित किया जाना है।
- सेक्शन 1 को 6 लेन के रूप में विकसित किया जाना है।
- साथ ही, इसे दो पैकेजों में बांटा गया है। पैकेज 1 दिल्ली के हिस्से में आता है और पैकेज 2 उत्तर प्रदेश के हिस्से में आता है।

- इस राजमार्ग का उद्देश्य आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करना और निवेश को प्रोत्साहित करना है।
- इस सड़क मार्ग से दिल्ली-देहरादून के बीच यात्रा का समय आठ घंटे से घटाकर लगभग ढाई घंटे किया जाएगा।
- वन्यजीवों की निर्बाध आवाजाही के लिए यह एशिया का सबसे बड़ा 12 किमी का वन्यजीव ऊंचा गलियारा होगा।
- इस एक्सप्रेसवे में 500 मीटर के अंतराल पर 750 से अधिक वर्षा जल संचयन और जल पुनर्भरण बिंदु होंगे। इसमें छह इंटरचेंज, चार फ्लाईओवर, छह प्रमुख पुल, 10 छोटे और दो आरओरी और 10 वीयूपी होंगे।

6. विश्व मृदा दिवस:

- विश्व मृदा दिवस प्रतिवर्ष 5 दिसंबर को मनाया जाता है।

- यह दिन संयुक्त राष्ट्र के अंतर्गत संचालित खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) द्वारा और कई अन्य अंतरराष्ट्रीय संगठनों द्वारा भी मनाया जाता है।

इस वर्ष विश्व मृदा दिवस का विषय है:

"मिट्टी का लवणीकरण रोकें, मिट्टी का उत्पादन बढ़ाएँ"

यह इस तथ्य पर टिप्पणी करता है कि खाद्य सुरक्षा मिट्टी के स्वास्थ्य पर निर्भर करती है।

मिट्टी का महत्व:

- मिट्टी पृथ्वी की जैव विविधता के 25 प्रतिशत से अधिक हिस्से को अधिगृहित करती है। मृदा प्रदूषण को नियंत्रित करना महत्वपूर्ण है क्योंकि खराब मृदा प्रबंधन भूमि के नीचे के सूक्ष्मजीवों को प्रभावित करेगा।
- ये सूक्ष्मजीव पारिस्थितिकी तंत्र को संरक्षित करने में लगातार सहायता कर रहे हैं। वे नाइट्रोजन को स्थिर करने में मदद करते हैं जो पौधों की वृद्धि के लिए आवश्यक है।
- वे अपघटन की प्रक्रिया द्वारा मिट्टी में पोषक तत्व भी मिलाते हैं।

इस दिवस समारोह का इतिहास:

- अंतर्राष्ट्रीय मृदा विज्ञान संघ ने 5 दिसंबर को विश्व मृदा दिवस मनाने की सिफारिश की थी। थाईलैंड के नेतृत्व में, एफएओ ने विश्व मृदा दिवस की औपचारिक स्थापना का समर्थन किया।
- इस दिवस को मनाने का निर्णय ग्लोबल सॉयल पार्टनरशिप के अंतर्गत किया गया था। 2014 में यह विश्व मृदा दिवस पहली बार मनाया गया था।

5 दिसंबर को चुने जाने का वास्तविक कारण क्या था?

यह दिन थाईलैंड के दिवंगत राजा भूमिबोल अदुल्यादेज के जन्मदिन के दिन ही होता है। वह इस पहल के मुख्य प्रस्तावक थे।

भारत में मृदा संरक्षण:

- भारत क्षेत्रीय मृदा संरक्षण कार्यक्रमों पर ध्यान केंद्रित करता है। उदाहरण के लिए, सोहरा पठार में मिट्टी की नमी बढ़ाने के लिए चेरापूंजी पारिस्थितिक परियोजना शुरू की गई थी।
- हालांकि, राष्ट्रीय कृषि विज्ञान योजना जो देश में बारानी कृषि प्रणालियों के विकास पर ध्यान केंद्रित करती है, पूरे भारत में मिट्टी की गुणवत्ता पर ध्यान केंद्रित करती है। साथ ही मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना भी शुरू की गई।

व्यापक मृदा संरक्षण अभ्यास:

- व्यापक मृदा संरक्षण कार्यक्रमों में कम जुताई, फसल चक्र, सोपान खेती, कवर क्रॉपिंग और पलवार (पत्तों से ढकना) शामिल हैं।
- भारत सरकार मिश्रित फसल, मिश्रित खेती, नियंत्रित चराई, चेक बांधों के निर्माण आदि को लागू करती है। साथ ही, भारत सरकार ने खेती को स्थानांतरित करने पर प्रतिबंध लगा दिया है।

7. अलग राज्य, ग्रेटर टिपरालैंड की मांग: क्यों सुर्खियों में है:

हाल ही में, त्रिपुरा में कई आदिवासी संगठनों ने इस क्षेत्र में स्वदेशी समुदायों के लिए एक अलग राज्य, ग्रेटर टिपरालैंड की मांग को आगे बढ़ाने के लिए हाथ मिलाया है।

प्रकरण के मुख्य तथ्य:

- त्रिपुरा की टीआईपीआरए मोथा (तिपरा इंडिजिनस प्रोग्रेसिव रीजनल अलायंस) और आईपीएफटी (इंडिजिनस पीपल्स फ्रंट ऑफ त्रिपुरा) पार्टियां पूर्वोत्तर राज्य के स्वदेशी समुदायों के लिए 'ग्रेटर टिपरालैंड' के एक अलग राज्य की मांग कर रही हैं।
- वे चाहते हैं कि केंद्र, भारतीय संविधान के अनुच्छेद 2 और 3 के अंतर्गत अलग राज्य बनाए।
- त्रिपुरा में 19 अधिसूचित अनुसूचित जनजातियों में, त्रिपुरी (उर्फ तिप्रा और टिपरास) सबसे बड़े हैं।
- 2011 की जनगणना के अनुसार, राज्य में कम से कम 5.92 लाख त्रिपुरी हैं, इसके बाद ब्रू या रियांग (1.88 लाख) और जमातिया (83,000) हैं।
- ये उपरोक्त तीन आदिवासी समूह राज्य में प्रमुख आदिवासी हैं। कुछ छोटे आदिवासी समूहों ने हाथ मिला लिया है और टीआईपीआरए मोथा (तिरपाहा स्वदेशी क्षेत्रीय गठबंधन)

और आईपीएफटी (इंडिजिनस पीपुल्स फ्रंट ऑफ त्रिपुरा) राजनीतिक दलों का गठन किया है।

इस प्रकरण में संवैधानिक व्यवहार्यता:

- संविधान के अनुच्छेद 2 के अनुसार "संसद को नए राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की स्थापना की अनुमति देने और भारतीय संघ में नए राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के प्रवेश की अनुमति देने का अधिकार है"।
- जबकि अनुच्छेद 3 कहता है कि "संसद को किसी राज्य के क्षेत्रफल को बढ़ाने या घटाने का अधिकार है"।

यह प्रकरण खबरों में क्यों आया?

- त्रिपुरा 13वीं शताब्दी के अंत से 1949 में भारत सरकार के साथ विलय के दस्तावेज पर हस्ताक्षर करने तक माणिक्य वंश द्वारा शासित एक साम्राज्य था।
- इस मांग का वास्तविक कारण राज्य की जनसांख्यिकी में बदलाव के संबंध में स्वदेशी समुदायों की चिंता है, जिसने उन्हें अल्पसंख्यक बना दिया है।
- यह 1947 और 1971 के बीच तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान से बंगालियों के विस्थापन के कारण हुआ।
- 1881 में, त्रिपुरा में आदिवासियों की जनसंख्या 63.77% थी, जो 2011 तक घटकर 31.80% हो गई।
- बीच के दशकों में, जातीय संघर्ष और उग्रवाद ने राज्य को जकड़ लिया, जो बांग्लादेश के साथ लगभग 860 किलोमीटर लंबी सीमा साझा करता है।

- संयुक्त मंच ने यह भी बताया है कि स्वदेशी लोगों को न केवल अल्पसंख्यक बना दिया गया है, बल्कि माणिक्य वंश के अंतिम राजा बीर बिक्रम किशोर देबबर्मन द्वारा उनके लिए आरक्षित भूमि से भी बेदखल कर दिया गया है।